Centenary of Tansen Samaroh

In the melodious atmosphere of Gwalior, where classical music weaves its magical influence, the Tansen Samaroh has emerged as one of India's most revered classical music events. Held annually at the Samadhi of Music Emperor Tansen in Gwalior, this festival marks its 100th year in 2024, making it perhaps the only classical music festival in India celebrated continuously for a century. Organized by the Madhya Pradesh Government, the festival is a symbol of respect for Tansen, whose legacy is central to Indian classical music.

Tansen, born in Behat village near Gwalior, revolutionized Indian classical music. His compositions and mastery over ragas earned him the title of Music Emperor at the Mughal court under Emperor Akbar. His legacy, immortalized in the "Veer Bhanuday Kavya," is encapsulated in the lines: "There has been no musician like Tansen, nor will there be one in the future." His influence still resonates in the music of today, inspiring generations of musicians.

The Tansen Music Festival is not merely a celebration of Tansen's music but serves as a grand confluence of classical music, drawing thousands of music lovers. The Tansen Music Festival's roots trace back to Maharaja Madhavrao Scindia, who initiated the Urs Tansen to honor Tansen's legacy. This festival, celebrated by both Hindu and Muslim communities, reflects the spirit of unity, Tansen's music embodied. From its inception, it has been a symbol of harmony through music, lasting three days.

Gwalior's music schools have been central to the festival's success. Raja Mansingh, the ruler of Gwalior, is believed to have established a music school in the Gujari Mahal, where Tansen himself trained. Every year, students perform Dhrupad, Gwalior's primary music genre, at the festival's opening, paying homage to Tansen's musical heritage. Behat: Tansen's Birthplace

Every year, a small tribute is held during the festival, where artists gather to honor Tansen. Additionally, the Tansen Award, presented by the Madhya Pradesh Government's Department of Culture, recognizes individuals who have made exceptional contributions to music. Established in 1980, the award has increased in prestige and is now valued at 5 lakh rupees.

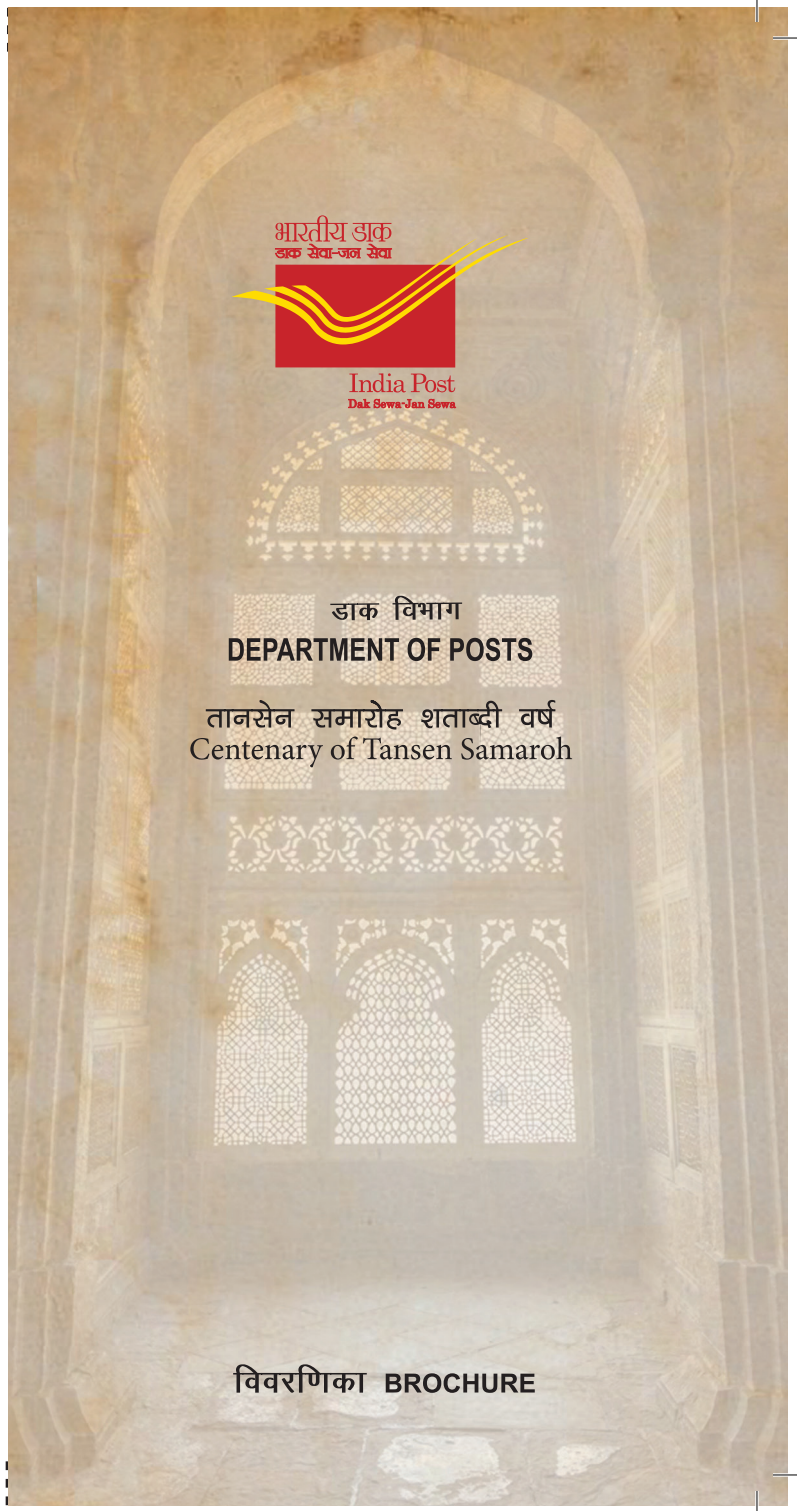
The centenary celebrations of the Tansen Samaroh in 2024 are designed to reflect the grandeur and cultural richness of the past 100 years.

Tansen's influence will be celebrated internationally with cultural events in 20 countries, aiming to introduce his music to global audiences. Behat will also become a Music Pilgrimage destination, with monthly music sessions held to honor Tansen's birthplace and legacy.

As part of the centenary celebrations, Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp to honor the 'Centenary of Tansen Samaroh'. This stamp will symbolize Tansen's profound contribution to Indian classical music and his lasting impact on the world.

Credits:

Stamp/ FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Anuj Kumar
Text	:	Based on information provided by the proponent



तानसेन समारोह शताब्दी वर्ष

ग्वालियर की संगीतमय फ़िज़ा जिसमें मानो संगीत के सुर घुले हुए हैं, वहां आयोजित होने वाला 'तानसेन समारोह' भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित शास्त्रीय समारोह के रूप में उभरा है। ग्वालियर स्थित संगीत सम्राट तानसेन के समाधि स्थल पर प्रतिवर्ष होने वाला यह समारोह 2024 में अपने 100 वर्ष पूरे करने जा रहा है। यह संभवतः भारत का एकमात्र ऐसा शास्त्रीय संगीत समारोह है, जिसका एक सदी से निरंतर आयोजन किया जा रहा है। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित किया जाने वाला यह समारोह तानसेन के प्रति सम्मान का प्रतीक है, जिनकी विरासत, भारतीय शास्त्रीय संगीत का मुख्य आधार है।

ग्वालियर के पास स्थित बेहट गांव में जन्मे तानसेन भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में मानो क्रांति ले आए। उनके द्वारा रचित संगीत और रागों पर उनकी महारत के चलते मुगल सम्राट अकबर ने उन्हें अपने दरबार में संगीत सम्राट की उपाधि से विभूषित किया। उनकी अमर विरासत 'वीर भानुदय काव्य' में लिखी गई पंक्तियों "तानसेन जैसा न कोई संगीतकार हुआ है और न ही भविष्य में होगा" में प्रतिबिंबित होती है। उनका संगीत पीढियों से संगीतकारों के लिए प्रेरणा स्रोत है तथा उसका प्रभाव आज के संगीत में भी देखने को मिलता है।

तानसेन संगीत महोत्सव, तानसेन के संगीत का ही उत्सव नहीं है, बल्कि शास्त्रीय संगीत का ऐसा भव्य संगम है, जिसमें हजारों संगीतप्रेमी शिरकत करते हैं। तानसेन संगीत समारोह की शुरुआत तानसेन के सम्मान में महाराजा माधव राव सिंधिया द्वारा शुरू किए गए 'उर्स तानसेन' से हुई। हिंदू और मुस्लिम, दोनों समुदायों द्वारा मिलकर मनाया जाने वाला यह समारोह तानसेन के संगीत में निहित एकता की भावना को दर्शाता है। तीन दिन तक चलने वाला यह समारोह, शुरुआत से ही संगीत के माध्यम से सद्भाव का प्रतीक रहा है।

ग्वालियर के संगीत विद्यालयों की इस महोत्सव की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका है। कहा जाता है कि ग्वालियर के शासक, राजा मानसिंह द्वारा गुजरी महल में एक संगीत विद्यालय की स्थापना की गई थी, जहां से स्वयं तानसेन ने संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आज भी प्रतिवर्ष इस विद्यालय के विद्यार्थी, तानसेन समारोह के उद्घाटन समारोह में ग्वालियर की प्रमुख संगीत शैली ध्रुपद की प्रस्तुति देते हैं, जो तानसेन की विरासत के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

प्रति वर्ष, महोत्सव के दौरान एक छोटे से कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जिसमें अनेक कलाकार तानसेन के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकत्रित होते हैं। इस दौरान, मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा संगीत के क्षेत्र में असाधारण योगदान करने वाले कलाकारों को तानसेन पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाता है। इस पुरस्कार की स्थापना 1980 में की गई थी। तब से इस पुरस्कार की प्रतिष्ठा लगातार बढ़ी है और अब इस पुरस्कार की राशि बढ़कर 5 लाख रुपए हो गई है।

2024 में आयोजित होने वाले तानसेन समारोह के शताब्दी वर्ष समारोह की संकल्पना इस प्रकार की गई है कि इस शानदार समारोह में पिछले 100 वर्षों की भव्यता और सांस्कृतिक समृद्धि की झलक प्रतिबिंबित हो।

तानसेन महोत्सव, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी 20 देशों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से मनाया जाएगा। इसका उद्देश्य वैश्विक संगीत प्रेमियों को उनके संगीत से परिचित कराना है। बेहट को संगीत की तीर्थ स्थली के रूप में स्थापित किया जाएगा तथा यहां तानसेन की जन्मस्थली और विरासत के सम्मान में मासिक संगीत सत्र आयोजित किए जाएंगे।

तानसेन समारोह के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में डाक विभाग 'तानसेन समारोह शताब्दी वर्ष' पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट, भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में तानसेन के अनमोल योगदान और विश्व पर उसके अमिट प्रभाव का प्रतीक–स्वरूप है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री अनुज कुमार

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 303460
Stamps Printed	: 303460
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00